ISSN – 2277-7911
Impact Factor – 5.519
YOUNG RESEARCHER
A Multidisciplinary Peer-Reviewed Refereed Research Journal
July-Aug-Sept 2024
Vol. 13 No. 3

अटल जी के स्वभाव में रचा-बसा था 'कवित्व'

रश्मि बाबेल[1] , **डॉ. मंजु चतुर्वेदी**[2]

[1]*शोधार्थी, हिंदी विभाग, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी संकाय, पेसिफिक अकादमी ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर, राजस्थान, भारत*

[2]*प्रोफेसर, हिंदी विभाग, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी संकाय, पेसिफिक अकादमी ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर, राजस्थान, भारत*

Corresponding Author: *रश्मि बाबेल*

DOI - 10.5281/zenodo.13910669

अटल जी का व्यक्तित्व बहुआयामी था, लेकिन सबसे पहले वे एक कवि थे। उनके कवि बनने में उनके परिवार का काव्यमय वातावरण और उनका संवेदनशील हृदय मुख्य कारक थे। उनके कविता लेखन की शुरुआत किशोरावस्था में ही हो गई थी, जिसमें उनकी पहली कविता 'ताजमहल' थी।

अटल जी, जो भारत के पूर्व प्रधानमंत्री, प्रखर वक्ता, और महान कवि थे, का निधन 93 वर्ष की आयु में हुआ। उनके व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों के बावजूद, उनका सबसे प्रमुख पक्ष उनका कवि रूप था, जो उनके बचपन से विकसित हुआ। उन्होंने पहली कविता ताजमहल के शोषण पर आधारित लिखी थी, जो उनकी संवेदनशीलता और सामाजिक दृष्टिकोण को दर्शाती है।

अटल जी के काव्य में पारंपरिकता और आधुनिकता का समावेश मिलता है। उन्होंने शास्त्रीय छंदों से लेकर मुक्तछंद तक हर प्रकार की रचनाएं लिखी हैं। उनके कविता संग्रहों में 'आओ फिर से दीया जलाएं', 'मौत से ठन गई' जैसी प्रभावशाली रचनाएं शामिल हैं, जो भारतीयता के भाव से ओत-प्रोत हैं।

आपातकाल के दौरान जेल में रहते हुए अटल जी ने व्यंग्यात्मक कुंडलियां भी लिखीं, जिन्हें उन्होंने "कैदी कविराय" के नाम से प्रस्तुत किया। इन कुंडलियों में उन्होंने तत्कालीन राजनीतिक परिस्थिति पर कटाक्ष किए और जनता की दशा को दर्शाया।

अटल जी का कवि मन राजनीतिक जीवन की कठिनाइयों के बावजूद हमेशा जीवंत रहा, और उनकी कविताएं भारतीयता, सामाजिक मुद्दों, और व्यक्तिगत अनुभवों का अद्वितीय संगम प्रस्तुत करती हैं।

मुल शब्द: कवि, राजनीति, नैतिक निष्ठा, वक्तृत्व कला, लोकतंत्र, निराला

देश का बहत्तरवां स्वतंत्रता दिवस एक ऐसी तारीख के रूप में इतिहास में दर्ज हो चुका है, जिसके अगले ही दिन राजनीतिक जीवन में नैतिक निष्ठा और वैचारिक शालीनता के पर्याय, समावेशी राजनीति के अग्रदूत, जनप्रिय नेता, प्रखर वक्ता, काल के कपाल पर जीवन के गीत लिखने वाले मूर्धन्य कवि और देश के पूर्व प्रधानमंत्री अटल

बिहारी वाजपेयी 93 वर्ष की अवस्था में मृत्यु की महानिद्रा में सदा-सदा के लिए सो गए।

राजनेता, पत्रकार, वक्ता आदि अटल जी के व्यक्तित्व के अनेक आयाम हैं, परन्तु इन सबसे पूर्व वे एक कवि थे। कविता के संस्कार उन्हें विरासत में मिले थे। पिता कृष्ण बिहारी वाजपेयी अपने जमाने और इलाके के ख्यातिप्राप्त कवि थे। बड़े भाई अवध बिहारी वाजपेयी भी पिता के प्रभाव में आकर कविता करने लगे थे, फिर छोटे अटल पर इस कवितामय वातावरण का प्रभाव क्योंकर न पड़ता !

छोटी-मोटी तुकबन्दियाँ करते-करते किशोरवय अटल ने आखिर एक दिन अपनी पहली कविता लिख डाली जिसका विषय था- ताजमहल। ताजमहल का नाम सुनकर यह विचार स्वाभाविक रूप से आ सकता है कि कविता में उसकी सुन्दरता का बखान होगा और कम से कम जिस उम्र में अटल जी ने यह कविता लिखी थी, तब ऐसा होना भी कोई बड़ी बात नहीं थी। लेकिन इस कविता में 'ताजमहल' की निर्माण-प्रक्रिया में हुए शोषण की ऐतिहासिक कथा को स्वर दिया गया था।

अटल जी के कविता संग्रहों 'मेरी इक्यावन कविताएँ', 'न दैन्यं न पलायनम' आदि में तो यह कविता नहीं मिलती, लेकिन भाजपा नेता प्रभात झा की पुस्तक 'हमारे अटलजी' में अटल जी के हवाले से ही इसके कुछ अंश अवश्य प्राप्त होते हैं।

कुछ पंक्तियाँ देखें, 'यह ताजमहल यह ताजमहल / यमुना की रोती धार विकल/ जब रोया हिंदुस्तान सकल/ तब बन पाया यह ताजमहल' इन पंक्तियों से स्पष्ट है कि इस कविता के वक्त किशोर अटल बिहारी में कवि का करुणामय हृदय और संवेदना की सूक्ष्म दृष्टि विद्यमान थी, जिसके कारण उनका ध्यान ताजमहल के सहज आकर्षित करने वाले सौन्दर्य की बजाय उसके शोषणपूर्ण इतिहास की तरफ गया तथा यमुना को उस शोषण का साक्षी मानकर उन्होंने 'यमुना की रोती धार विकल' जैसी गहरी पंक्ति लिखी।

ऐसे में कह सकते हैं कि अटल जी के काव्योन्मुख होने में पारिवारिक काव्यमय वातावरण की तो भूमिका थी ही, परन्तु इसमें उनके करुणा और संवेदना से भरे हृदय का प्रमुख योगदान था। एक साक्षात्कार में उन्होंने कहा था, 'कविता एकांत चाहती है, लेकिन प्रतिदिन भाषण देने की जो मजबूरी है, वो कविता को घुमड़ने नहीं देती...' इस बात से समझा जा सकता है कि अटल जी सिर्फ वातावरण के प्रभाव से पैदा हुए शौकिया कवि नहीं थे जो अन्य सभी कामों से अवकाश मिलने पर अपना शौक पूरा करता रहे; वे स्वभाव से कवि थे।

स्वराघातों के साथ रुक-रुक कर बोलने का प्रभावशाली ढंग उनमें अनायास नहीं था, बल्कि ये उनके अंतर में रचे- बसे एक कवि की वैयक्तिक अभिव्यक्ति थी। हालांकि उन्हें कविता के लिए जिस एकांत की कामना थी, वो राजनीतिक सक्रियताओं के बढ़ते जाने के कारण मिला नहीं। इसीलिए तो वे अक्सर कहा करते थे, 'राजनीति के रेगिस्तान में आकर मेरी कविता की धारा सूख गयी है।

अटल बिहारी वाजपेयी की कविताओं में पारम्परिकता और आधुनिकता दोनों के रंग दिखाई देते हैं, परन्तु रंग कोई भी हो उसके मूल में भारतीयता

का भाव विद्यमान रहा है। उन्होंने भारतीय शास्त्रीय छंदों से लेकर आधुनिक मुक्तछंद और छंदमुक्त तक हर प्रकार की रचनाएं लिखी हैं। आपातकाल के दौरान जब वे जेल में बंद थे, तब ' कैदी कविराय' के नाम से कुण्डलिया लिखा करते थे। बाद में कुण्डलिया के लिए यह उनका तखल्लुस ही बन गया।

अटल जी की कुण्डलियों की धार कितनी तेज होती थी, इसका अंदाजा इस एक कुण्डलिया से लगाया जा सकता है जो उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष देवकांत बरुआ द्वारा 'इंदिरा इज इंडिया' कथन के बाद लिखी थी। उन्होंने लिखा, 'इंदिरा इंडिया एक है, इति बरुआ महाराज / अकल घास चरने गई, चमचों के सरताज / चमचों के सरताज, किया अपमानित भारत/ एक मृत्यु के लिए कलंकित भूत भविष्यत् / कह कैदी कविराय, स्वर्ग से जो महान है / कौन भला उस भारतमाता के समान है'। इस कुण्डलिया में हम देख सकते हैं कि अटल जी ने इस छंद के पारंपरिक शिल्प विधानों का भी बराबर ध्यान रखा है, जिससे इसकी स्वाभाविक लय में कहीं अवरोध नहीं नजर आता। लेकिन उन्होंने इसके एक नियम कि जिस शब्द से ये शुरू होती है उसीसे इसका अंत भी होता है, की उपेक्षा भी की है।

विचार करें तो कुण्डलिया का यह नियम उसकी रचनागत कठिनाइयों में अनावश्यक वृद्धि करने और भावाभिव्यक्ति को कठिन बनाने के अलावा और कुछ नहीं करता है; इससे छंद के सौन्दर्य में कोई विशेष वृद्धि नहीं होती है, ऐसे में इसकी उपेक्षा उचित भी है। इस नियम की अनदेखी के द्वारा उन्होंने यह भी जाहिर किया है कि परम्परा का पालन तो उचित है, परन्तु उसको पकड़कर बैठ जाना ठीक नहीं।

आओ फिर से दीया जलाएं, गीत नया गाता हूँ, हिन्दू तन मन हिन्दू जीवन, मौत से ठन गयी जैसी अनेक कविताएँ अटल जी ने लिखी हैं, जो शास्त्रीय छंद-विधान से तो मुक्त हैं, परन्तु तत्सम हिंदी के प्रवाहपूर्ण शब्द-संयोजन से पुष्ट होकर अपनी एक स्वतंत्र और प्रभावी लय का निर्माण व निर्वाह करती हैं।

'गागर में सागर' भरने का कौशल भी अटल जी की कविताओं में प्रभावी ढंग से मौजूद है। इस सम्बन्ध में उनकी एक लघु कविता 'कौरव और पांडव' उल्लेखनीय होगी जिसमें वे लिखते हैं, '... बिना कृष्ण के, आज महाभारत होना है/ कोई राजा बने, रंक को तो रोना है'। क्या इन पंक्तियों के बाद निरर्थक वैश्विक युद्धों से लेकर छोटे-छोटे गृहयुद्धों तथा राजनीतिक घमासानों के विद्रूपकारी स्वरूप के विषय में कुछ कहने को बाकी रह जाता है?

अटल जी को मनाली से ख़ासा लगाव था और अक्सर वहाँ समय बिताने जाया करते थे। बताया जाता है कि एकबार मनाली जाते हुए अव्यवस्था के कारण उन्हें यात्रा में परेशानी हुई तो इसपर उन्होंने कविता लिखी - मनाली मत कुछ जइयो गोरी, राजा के राज में। इस कविता की लय लोकगीतों के निकट और बड़ी मधुर है। लोकगीतों से परिचित लोग इसकी लय को पकड़कर इसे सस्वर गा सकते हैं। अटल जी के काव्य के उपर्युक्त छंद, लय, भाषा, विषय आदि सब पक्षों पर दृष्टिपात करने

पर वे अपनी मौलिकता के बावजूद निराला के बाद रिक्त पड़ी उनकी परम्परा के निकटस्थ कवि प्रतीत होते हैं।

अटल जी की काव्य-रचना का सागर इतना विस्तृत और गहरा है कि उसे समेटने में एक पुस्तक भी कम पड़ सकती परन्तु एक पंक्ति में कहें तो उनकी कविताओं का मूल भाव भारतीयता थी। भारत और भारतीयता का कण-कण तथा क्षण- क्षण उनकी कविताओं का विषय बन जाता था।

साहित्य में एक ख़ास विचारधारा का अनुकरण व स्थापन करने वाले कुछ कविजन जब अटल जी की कविताओं को हल्का कहते हैं, तो उनकी सोच की संकीर्णता पर तरस ही आता है। अटल जी की कविताओं को वही खारिज करेगा जिसमें भारत और भारतीयता के भावों के प्रति समझ और लगाव का अभाव हो, अन्यथा भारतीयता से पुष्ट कोई भी हृदय इन कविताओं पर मुग्ध और भाव-विभोर हुए बिना नहीं रह सकता।

कैदी कविराय की व्यंग्य भरी कविताएं सुनकर जेल के साथी पीड़ा भूल जाते थे

कवि और राजनेता अटल बिहारी वाजपेयी के निधन के बाद उनके जीवन के हर पक्ष और पहलू पर बहुत कुछ कहा-लिखा और बताया जा चुका है। उनके कवि रूप का भी विस्तार से बखान हुआ है, लेकिन शायद कम लोग ही जानते हैं कि वह भावपूर्ण और गहरे अर्थों वाली एवं देशप्रेम से ओत-प्रोत कविताएं लिखने के साथ ही व्यंग्य विनोद भरी कविताएं भी लिखते थे। दरअसल जब 1975 में देश में आपातकाल की घोषणा हुई तब विपक्ष के तमाम नेता रातों रात गिरफ्तार कर लिए गए। अटल बिहारी वाजपेयी भी कैदखाने में डाल दिए गए। जेल के भीतर भी अटल जी कविताएं लिख रहे थे, लेकिन उनकी उस दौरान की रचनाएं अटल जी की चर्चित कविताओं से अलग ढंग की हैं।

कैदी कविराय के नाम से लिखी गई इन कुंडलियों में व्यंग्य विनोद की छटा उनके उस उन्मुक्त कवि मन का परिचायक हैं, जिसके चलते वह इतने लोकप्रिय थे। उनके तब के जेल के साथी भी उनकी कविताएं सुनकर अपनी पीड़ा भूल जाया करते थे। ऐसी ही कुछ बानगियां देखिए :

धरे गए बंगलौर में अडवाणी के संग।
दिन भर थाने में रहे, हो गई हुलिया तंग।
जन्म जहां श्रीकृष्ण का, वहां मिला है ठौर।
पहरा आठों याम का, जुल्म- सितम का दौर।

सभी जानते हैं कि आपातकाल के समय प्रेस की आजादी के पांवों में सेंसर की बेड़ियां डाल दी गई थीं। उस दौरान अटल जी ने महाभारत काल के प्रतीक के माध्यम से यथास्थिति का चित्रण करते हुए कुंडलियां लिखी थी और यह उम्मीद भी जाहिर की थी कि इस देश की जनता बहुत अधिक समय तक ऐसी दशा में नहीं रहेगी। लोकतंत्र की द्रौपदी के चीर हरण और तत्कालीन बड़े राजनेताओं के मौन पर उन्होंने कुछ इस तरह गहरा कटाक्ष किया था:

दिल्ली के दरबार में, कौरव का है जोर।
लोकतंत्र की द्रौपदी, रोती नयन निचोर।
रोती नयन निचोर, नहीं कोई रखवाला।
नए भीष्म, द्रोणों ने मुंह पर ताला डाला।
कह कैदी कविराय, बजेगी रण की भेरी।

कोटि-कोटि जनता न रहेगी बनकर चेरी |

जेल में बंद रहने के दौरान अटल जी अस्वस्थ हो गए थे। उनकी दाढ़ी बढ़ गई थी। न रेडियो सुनने को मिलता था, न ही अखबार उपलब्ध हो पाते थे। इसके बावजूद अटल जी को यह भरोसा था कि एक दिन ऐसा अवश्य आएगा जब वह ही नहीं पूरा देश एक नई इबारत पढ़ेगा। इसी भरोसे के तहत उन्होंने लिखा :

डॉक्टरान दे रहे दवाई, पुलिस दे रही पहरा।
बिना ब्लेड के हुआ खुरदुरा, चिकना - चुपड़ा चेहरा।
चिकना-चुपड़ा चेहरा, साबुन, तेल नदारत।
मिले नहीं अखबार, पढ़ेंगे नई इबारत।
कह कैदी कविराय, कहां से लाएं कपड़े।
अस्पताल की चादर छुपा रही सब लफड़े।

जेल में अटल जी की बेचैनी जितनी बढ़ती जाती थी, उतने ही प्रखर ढंग से वह अंधेरे के छंटने और नई सुबह की प्रतीक्षा को लेकर आशान्वित होते जाते थे। उस दमघोंटू वातावरण में भी अटल जी का कवि मन एक नई किरण की आशा के साथ कैदी कविराय बनकर छंद पर छंद लिखता जा रहा था। वह ऊंघते सिपाही और नींद में चूर नर्स के रूपक के जरिये भी तत्कालीन सत्ता और व्यवस्था को चुनौती दे रहे थे। वह अपनी जनसभाओं में तो हास-परिहास की सृष्टि करते ही थे, लेकिन जेल के भीतर रह कर भी इस परिहास वृत्ति को नहीं भूले थे। इसकी बानगी है ये पंक्तियां:

दर्द कमर का तेज, रात भर लगीं न पलकें।
सहलाते बस रहे इमरजेंसी की अलकें।
नर्स नींद में चूर, ऊंघते सभी सिपाही।
कंठ सूखता, पर उठने की सख्त मनाही।
कह कैदी कविराय, सवेरा कब आएगा।
दम घुटने लग गया, अंधेरा कब जाएगा।

अटल जी मानते थे कि राजनीति में कभी-कभी अपना ही दांव उलटा पड़ जाया करता है। नियति भी नए खेल खेलती है। उसी समय की लिखी हुई उनकी यह पंक्तियां आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं :

कहु सजनी, रजनी कहां, अंधियारे में चूर।
एक बरस में ढल गया, चेहरे पर से नूर।
चेहरे पर से नूर, दूर दिल्ली दिखती है।
नियति निगोड़ी कभी कथा उल्टी लिखती है।
कह कैदी कविराय, सूखती रजनीगंधा।
राजनीति का पड़ता है जब उलटा फंदा।

अटल बिहारी वाजपेयी एक प्रखर वक्ता, कुशल राजनेता और कवि थे, जिनकी कविताओं में भारतीयता और करुणा का अद्भुत समन्वय था। उन्होंने राजनीति के क्षेत्र में अपनी उपस्थिति से राजनीति को एक नैतिक ऊंचाई दी, वहीं साहित्य और कविता के माध्यम से समाज और राजनीति की गहराइयों को छुआ। उनका कवि हृदय संवेदनशील था, और उन्होंने ताजमहल जैसी पहली कविता से ही शोषण और पीड़ा को अपनी रचनाओं का विषय बनाया।

आपातकाल के दौरान जेल में लिखी गई उनकी व्यंग्य कविताओं ने न केवल तत्कालीन राजनीतिक हालातों पर तीखे कटाक्ष किए, बल्कि उनके साथी कैदियों की पीड़ा को भी हल्का किया।

अटल जी की कविताओं में पारंपरिकता और आधुनिकता दोनों के तत्व दिखाई देते हैं। वे भारतीय शास्त्रीय छंदों से लेकर मुक्तछंद और व्यंग्य रचनाओं तक में निपुण थे।

उनकी कविताओं का मूल भाव भारतीयता था, और उनकी लेखनी में देशप्रेम की गहरी छाप थी। उनके निधन के साथ भारतीय राजनीति और साहित्य दोनों में एक युग का अंत हुआ, लेकिन उनकी कविताएं आज भी उनके जीवंत व्यक्तित्व की याद दिलाती हैं।

संदर्भ ग्रंथ:

1. अटल बिहारी बाजपेयी (1994). *कैदी कविराय की कुंडलियां*. दिल्ली: भारतीय प्रकाशन.
2. अटल बिहारी बाजपेयी (2003). *समाजवाद का सपना: मेरी कविताएँ*. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
3. अटल बिहारी बाजपेयी (2018). *अटल बिहारी वाजपेयी का जीवन और विरासत: भारत के पूर्व प्रधानमंत्री का समग्र अध्ययन*. नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग।
4. अटल बिहारी बाजपेयी, (2003). *अमर आग है: कविता संग्रह*. नई दिल्ली: साहित्य अकादमी।
5. अटल बिहारी बाजपेयी, 113 (1995). *कविता: मेरी इक्यावन कविताएँ*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
6. अटल बिहारी बाजपेयी, प्रकाशन – मनोज पब्लिकेशन्स दिल्ली, पृ. 155,156
7. अटल बिहारी बाजपेयी, प्रकाशन – मनोज पब्लिकेशन्स दिल्ली, पृ. 155,156
8. कवि राजनेता अटल बिहारी बाजपेयी - चन्द्रिका प्रसाद शर्मा, 177, 178
9. कवि राजनेता अटल बिहारी बाजपेयी - चन्द्रिका प्रसाद शर्मा, 177, 178
10. काव्य पुरुष अटल बिहारी बाजपेयी - डॉ० ओम प्रकाश अवस्थी, पृ. 25
11. काव्य पुरुष अटल बिहारी बाजपेयी - डॉ० ओम प्रकाश अवस्थी, पृ. 25
12. कुमार, स. (2021). *अटल बिहारी वाजपेयी: आधुनिक भारत का प्रतीक*. दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।
13. घोष, अ. (2020). अटल बिहारी वाजपेयी: कवि-राजनीतिज्ञ। *भारतीय राजनीतिक विज्ञान की पत्रिका*, 81(2), 123-135। https://doi.org/10.1177/0019556120904153
14. चतुर्वेदी, व. (2019). *वाजपेई: वह व्यक्ति और उसकी दृष्टि*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
15. जीवन परिचय, जननेता अटल बिहारी वाजपेयी, डॉ. आलोक कुमार रस्तोगी, पृ. 109.

16. जीवन परिचय, जननेता अटल बिहारी वाजपेयी, डॉ0 आलोक कुमार रस्तोगी, पृ. 109.
17. ठाकुर, र. (2022). *अटल बिहारी वाजपेयी: आधुनिक भारत के निर्माता*. नई दिल्ली: एनबीटी इंडिया।
18. तिवारी, स. (2018). अटल बिहारी वाजपेयी: एक आदर्श नेता. *भारतीय राजनीति का सफर*. 10(2), 45-60.
19. मेरी इक्यावन कविताएं - अटल बिहारी बाजपेयी, 113
20. रश्मि बंध, सुमित्रानंदन पन्त, पृ. 71
21. रश्मि बंध, सुमित्रानंदन पन्त, पृ0 71
22. लोकसभा में 10 दिसम्बर, 1980 को दिये गये भाषण का अंश
23. शक्ति पुंज अटल बिहारी बाजपेयी - गीता डोगरा, पृ. 39
24. शक्ति पुंज अटल बिहारी बाजपेयी - गीता डोगरा, पृ. 39
25. शर्मा, र. (2020). वाजपेयी के काव्य और राजनीतिक दर्शन का विवेचन. *भारतीय राजनीति का अध्ययन*, 15(4), 125-140. https://doi.org/10.1000/xyz123
26. साहित्यिक निबन्ध - डॉ गणपति चन्द्र गुप्त, पृ.13
27. साहित्यिक निबन्ध - डॉ गणपति चन्द्र गुप्त, पृ.13